International Journal of Applied Research 2025; 11(2): 108-110

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2025; 11(2): 108-110
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2024
Accepted: 24-12-2024

डॉ. रेखा रानी
सहायक प्राध्यापिका, आई. बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पानीपत, हरयाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रेखा रानी
सहायक प्राध्यापिका, आई. बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पानीपत, हरयाणा, भारत

तुलसीदास कृत रामचरितमानस आज के सन्दर्भ में

डॉ. रेखा रानी

प्रस्तावना

तुलसीदास भक्ति काल के प्रतिष्ठित कवियों में से एक हैं। उनका काव्य और उनका दृष्टिकोण आज भी उतना ही लोकप्रिय व प्रासंगिक है जितना तत्कालीन समय में था। तुलसीदास राम काव्य धारा के प्रवर्तक कवि हैं राम काव्य परंपरा को उत्कृष्ट एवं गौरवशाली स्थान दिलाने का श्रेय अवधी और ब्रज के महाकवि तुलसीदास को ही प्रमुख रूप से जाता है वह प्रकांड विद्वान, उच्च कोटि के रचनाकार, परम भक्त, दर्शन और धर्म के सूक्ष्म व्याख्याता, सांस्कृतिक मूल्यों के प्रतिष्ठाता, बहुभाषाविद, आदर्शवादी भविष्य दृष्टा, विश्व प्रेम के पोषक, भारतीयता के संरक्षक, लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण तथा अद्भुत समन्वयकारी थे। अपनी कालजई रचना श्रीरामचरितमानस से उन्होंने समाज को जोड़ने का कार्य किया है। वर्तमान में भारत एक विखंडित समाज बन गया है। इसमें ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, शासक–शासित का भेद बढ़ता ही जा रहा है। तुलसीदास भारतीय संस्कृति के रक्षक थे। जिस युग में उनका आर्विभाव हुआ वह युग समाज, धर्म, राजनीति, दर्शन आदि हर दृष्टि से संक्रामक था। नीति, न्याय, मर्यादा एवं प्रजावत्सल सम्राट कल्पना मात्र थे। उच्च वर्ग विलासिता में मग्न था, तो निम्न वर्ग के लोग अकाल, महामारी, गरीबी,अज्ञानता एवं भूख से त्रस्त थे। धर्म की स्थिति भी सोचनीय थी। ज्ञान, भक्ति, कर्म का समन्वय छिन्न–भिन्न हो रहा था। ऐसे संक्रामक युग में एक ऐसे लोकनायक, व्यक्तित्व एवं मार्गदर्शक की जरूरत थी, जो परस्पर विच्छेद एवं विरोधी विचार धाराओं में संतुलन समन्वय स्थापित कर, भारतीय समाज और संस्कृति के सनातन स्वरूप की रक्षा कर सकें। प्रासंगिकता का साहित्य से जोड़कर अर्थ निकाला जाए तो इसका तात्पर्य है महिमा, महत्व, अस्मिता, एवं अस्तित्व। वही स्थिति वर्तमान समाज की बनी हुई है। तुलसी की प्रासंगिकता का एक मुख्य कारण उन समस्याओं की निरंतरता है, जो तुलसी के तत्कालीन समय में विद्यमान थी और आज भी प्रासंगिक हैं तुलसी अपने समाज की जिन सामाजिक विसंगतियों, कपट व मिथ्या आचरण से चिंतित थे वैसे ही समस्याएं आज और विकट रूप में नैतिक मूल्यों में गिरावट, बढ़ते अपराधीकरण और भ्रष्टाचार आदि रूपों में दिखाई पड़ती है गरीबी और बेरोजगारी जिन्हें तुलसीदास ने अपनी कविताओं का केंद्र बिंदु बनाया वह आज भी पूरे विश्व के समक्ष एक प्रमुख चुनौती के रूप में विद्यमान है। समस्याओं की निरंतरता के साथ–साथ तुलसी की प्रासंगिकता, उनके दृष्टिकोण की मौलिकता के कारण भी अधिक है। उन्होंने तत्कालीन समाज की समस्याओं के निराकरण के लिए जिस 'रामराज्य' की कल्पना की थी, वैसे आदर्श राज्य की आवश्यकता आज के परिदृश्य में भी विद्यमान है–

''दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि ब्यापा
सब कर करहिं परस्पर प्रीति। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति ।
चारिउ चरण धर्म जग माहिं, पुरि रहा सपनेहु अध नाहीं ।
राम भगति रत नर अरु नारी, सकल परम गति के अधिकारी ।।''[1]

राम काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि तुलसीदास व उनके साहित्य के उच्च आदर्शों को रामराज में वर्णित समन्वय की भावना भी वर्तमान संदर्भ में विभिन्न धर्मों एवं जातियों के मेल मिलाप को लेकर भी उनकी प्रासंगिकता को प्रमाणित करती है। वास्तव में तुलसीदास धर्म, समाज, राजनीति, साहित्य, परिवार, नैतिक आदि सभी क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करते हुए तत्कालीन समाज में व्यापक वैषम्य, पारस्परिक विरोध, अनाचार, अधर्म, अशांति को दूर करने का सफल प्रयास करते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तुलसी के काव्य की समन्वय की प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए लिखा है –''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय जनता में, नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियॉ, आचार, निष्ठा और विचार पद्धतियां प्रचलित हैं।

तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, सगुण और निर्गुण का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय, ज्ञान और भक्ति का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय की विराट चेष्टा है।''[2]

राम राज्य में ताकतवर और दुर्बल आपस में मिल–जुल कर रहते हैं सबकी इच्छाएं भी पूर्ण होती है। उसने भावना प्रबल है, प्राकृतिक उपादान भी प्रजा के हित में है। दसों दिशाएं शांत और वनस्पतियां मानव के विकास में सलंगन है–

''फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन।रहहिं एक सांग गज पंचानन
खग मृग सहज बयरु बिसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बुढाई।''[3]

तुलसी चारों वर्णों के अलग–अलग कर्तव्य अवश्य निर्धारित करते हैं परंतु वर्ण, जाति के आधार पर किसी का बहिष्कार नहीं करते हैं। बल्कि मनों में व्याप्त ऊंच–नीच की भावना का प्रबल विरोध करते हैं। उनके समय में जातिगत भेद चरम पर था । शूद्रों की दशा चिंतनीय थी, उच्च जाति के लोग उन्हें अछूत मानकर उनके साथ मानवीय व्यवहार करते थे। उन्होंने समाज के इस वैषम्य को दूर करने के लिए राम को निषाद का सखा तथा भरत के समान भ्राता बताया है–

''तुम मन सखा भरत सम भ्राता ।
सदा रहेहु पुर आवत जाता ।''[4]

उनकी भक्ति सभी जातियों और वर्णों के लोगों को एक करने वाली है जिन लोगों के लिए ब्राह्मणों ने भक्ति के द्वार बंद कर दिए थे उन सबके लिए तुलसी ने उन्हें खोलकर प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय दिया। शबरी, गीध, अजामिल और अहिल्या आदि को प्रेमवश श्रीराम मुक्ति प्रदान करते हैं।

आज के विषम परिवेश में तुलसीकृत रामचरितमानस के अनुशासन से अनेकता में एकता के तत्वों को पहचाना जा सकता है और विखंडित समाज को अखंड भारत के आदर्श से जोड़ा जा सकता है। समाज की वर्तमान स्थिति में राम की प्रासंगिकता पुनः दृष्टिगत हो रही है। रामचरितमानस के माध्यम से हमारे लोकप्रिय कवि का उद्देश्य सामाजिक जीवन में उन मान्यताओं, मर्यादाओं एवं मूल्यों को स्थापित करना है। जिनसे समाज का मंगल हो तथा वह समृद्धिशाली, शक्तिशाली बने।

''सोचिअ बटु निज ब्रत परिहरई । जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई।
सोचिअ गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग ।।
सोचिअ जती प्रपंच रत विगत विवक विराग ।
बैखानस सोई सोचै जोगु । तपु बिहाइ जेहि भावहि भोगू।[5]

नीति भारतीय संस्कृति का विशिष्ट आधार है। तुलसी ने भी मानस में राजनीति, समाजनीति, व्यवहार नीति एवं लोकनीति आदि अनेक नीतियों का उल्लेख किया है। राजनीति पर तो उन्होंने विशेष प्रभाव डाला है वह राज्य और राजा का आदर्श तय करते हैं उनकी दृष्टि से राजा का आदर्श वही है जो शरीर के अंगों को पुष्ट करने में मुख का है। मुख्य भोजन तो ग्रहण करता है किंतु अपने पास न रखकर सभी अंगों के पालन पोषण में लगा देता है। एक राजा को भी प्रजा के साथ ऐसा ही आचरण करना चाहिए। तुलसीदास के अनुसार वही राजा अच्छा है जिसकी प्रजा सुखी है जिस राजा के राज्य में प्रजा दुखी है कवि ने उसे नरक का अधिकारी माना है–

जासु राजा प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवसि नरक अधिकारी।[6]

परंतु जिस रामराज्य का सपना उन्होंने देखा था, वह आज भी अपूर्ण है। नेता राम–राज का सपना दिखाकर जनता से वोट ठग रहे हैं और जनता दुखी हैं। इसके बावजूद भी पूरे संसार में एक आदर्श शासन व्यवस्था कायम करने की बात की जा रही है। इस प्रकार राम–राज्य की अवधारणा बनी हुई है और प्रासंगिकता भी बनी हुई है। मध्यकालीन भक्त कवि रामचरितमानस तुलसीदास रामराज की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उसके कानून कायदे एवं शान पद्धति प्रजा के हित में है उनके भगवान श्री राम एक आदर्श शासक हैं और प्रजा की भलाई में सदैव प्रयासरत दिखाई देते हैं उन्होंने सैकड़ों की संख्या में अश्वमेध यज्ञ किए हैं वह चक्रवर्ती सम्राट हैं उनके रोए रोए में ना जाने कितने संसार बसे हुए हैं प्रकृति में भी गतिशीलता श्रीराम के कारण बनी हुई है–

''भूमि सप्तसागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला।
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत ना तासु।
सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता धनेरी।
सोच महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरनी एहिं चरित तिनहहुं रति मानी।''[7]

मानव जीवन की सफलता के लिए दया, ममता, त्याग, उदारता, क्षमा, करुणा, सत्य, अहिंसा, शांति, परोपकार, दान, अनासक्ति, बलिदान, कृतज्ञता एवं समर्पण आदि मानवीय मूल्यों की रक्षा करना अनिवार्य है। इन गुणों से संपन्न व्यक्ति ही एक अच्छे समाज का निर्माण करते हैं। जो साहित्य इन मूल्यों की रक्षा न कर सके वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। तुलसी के राम भारतीय जनता के समस्त मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं उनकी सहानुभूति माता–पिता, भाई, पशु–पक्षी, निषाद, हनुमान, शबरी आदि सभी के लिए हैं। वह हनुमान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहते हैं–

''प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होई न सकत मन मोरा।
सुनुसुत तोहि उरिन में नहीं। देखेंउ करि बिचार मन माहीं।।''[8]

भारतीय संस्कृति में अहिंसा, परोपकार, अहं का विलगन, परिनिंदा का त्याग तथा सद् विचारों को विशेष महत्व दिया गया है और तुलसी का काव्य ''सत्यम शिवम सुंदरम'' की अभिव्यक्ति है। उनकी मान्यता है कि परोपकार के समान धर्म तथा पर पीड़ा से बड़ा कोई पाप नहीं है। तुलसीदास की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि वे मानव को सचेत करते हुए कहते हैं कि हमें कभी भी अनावश्यक विधियों से धनसंपदा एकत्रित नहीं करनी चाहिए जीवन की सार्थकता के लिए भक्ति, कर्म और ज्ञान में संतुलित सामंजस्य पर बल देते हैं। उनके अनुसार जीवन कर्म प्रधान है। कर्मों के अनुसार ही भाग्य का निर्धारण होता है। कर्म के अभाव में ज्ञान की प्राप्ति भी असंभव है। और ज्ञान प्राप्ति के लिए मन निर्मल होना अनिवार्य है। तुलसीदास की प्रासंगिकता इस बात में है कि वे मानव को सचेत करते हुए कहते हैं कि हमें कभी भी अनावश्यक विधियों से धनसंपदा एकत्रित नहीं करनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति जो रुपया पैसा कमाने हेतु रामभक्ति से दूर हो गए हैं, अभिमानी और महामूर्ख मानते हैं यथा–

''झूठों है झूठों है झूठो जगु, संतक हंत जे अंतू लहा है
तको सहै सठ ! संकट कोटिक, काढ़त दन्तक रंत हहा है ।
जानपनीकों गुमान बड़ो, तुलसी के विचार गँवार भहा है
जनकी जीवनु जान न जान्यों तो जान कहावत जान्यों कहा है ।।[9]

तुलसीदस ने भारतीय संस्कृति की दृष्टि से 'मानस' में एक ऐसे आदर्श परिवार का व्यवहारिक रूप दिखाया है जिसका अनुकरण

करके पारिवारिक जीवन को सुखद बनाया जा सकता है। वे सभी संबंधो के आदर्श रूप प्रस्तुत करके समाज में सुख–शांति, प्रेम, सौहार्द, समता, आदर–सत्कार, आज्ञा–पालन एवं मर्यादित आचरण का संचार करना चाहते हैं। कौशल्या आदर्शमाता, दशरथ आदर्श राजा और पिता, सीता आदर्श पत्नी व गृहिणी, लक्ष्मण और भरत आदर्श भ्राता है तथा हनुमान आदर्श सेवक, वशिष्ट आदर्श गुरू, सुग्रीव आदर्श मित्र और राम तो एक साथ आदर्श भाई, पुत्र, पति, प्रजापालक मर्यादा पुरूषोतम है। हमारी संस्कृति में सत्य, अहिंसा, संतोष, सदाचरण, परोपकार, क्षमा, आत्म समर्पण आदि सात्विक मूल्यों की प्रधानता रही है। तुलसी ने राम के रूप में एक ऐसे आदर्श नेतृत्व की परिकल्पना की है जो भारतीय संस्कृति की जीवन प्रतिमूर्ति है। वे धर्म, नैतिकता, लोकतंत्र, त्याग, मानवता एवं धर्म संस्थापक के मानदण्ड है यदि चाहते तो उनका राज्य अयोध्या से लेकर लंका तक फैल सकता था, लेकिन वे सांसारिक भोगों के प्रति पूर्णतः उदासीन थे, इसलिए सहर्ष अयोध्या का राज्यासन छोडकर वनवास ग्रहण कर लेते है। यहॉ तक कि किष्किन्ध्या और लंका के महाबलशाली बाली व रावण जैसे राजाओं का परास्त कर उनका राज्य भी हस्तगत नहीं करते है अपितु शरण में आये हुए उनके भाईयों को दान कर देते है। यह राम की महानता है और हमारी संस्कृति का सार भी।

तुलसीदास जी ने सीता को पवित्रता स्त्री के रूप में चित्रित किया है। सीता एक आदर्श गृहणी भी है। राम के राज्याभिषेक के पश्चात महारानी होकर भी परिजनों की सेवा करती है यद्यपि घर में अनेक सेवक है तथापि वह सेवा की सभी विधियों में पारंगत है। हमेशा उन्हीं कार्यो को वरीयता देती है जिससे घर का वातावरण सौहार्दपूर्ण बना रहे और श्री राम को सुख की अनुभूति हो–

''पति अनुकूल सदा रह सीता, सोभा खानि सुसील बिनीता।
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई, सेवति चरन कमल मन लाई।
जद्यपि गृहॅ सेवक सेवकिनी, बिपुल सदा सेवा विधि गुनी।
निज कर गृह परिचरजा करई, रामचन्द्र आयसु अनुसरई''।।[10]

तुलसी ने दाम्पत्य प्रेम की अभिव्यक्ति में भी मर्यादा भाव को बराबर बनाये रखा है। सीता और राम का मिलन मर्यादा से प्रेरित है। अभिषेक के समय राम को जब वन जाने की आज्ञा मिलती है, उस समय सीता उसी मार्ग का अनुसरण करती है। जिसका हमारी संस्कृति से अन्तर्गत एक सहधर्मिणी को करना चाहिए। राजमहलों के सुख–भोग त्यागकर वन जाने का निश्चय करती है। वह राम के सुख–दुख की सच्ची संगिनी है। तुलसीदास ने दाम्पत्य प्रेम में मर्यादा पालन को केवल स्त्रियों तक ही सीमित नहीं रखा, अपितु पुरूषों के लिये भी अनिवार्य माना है। स्त्रियों की भांति पुरूषों के लिये भी एक पत्नीव्रत का प्रतिमान निर्धारित करते है। राम आजीवन पत्नीव्रत धर्म को पूर्ण निष्ठा से निभाते हैं। अन्त में यज्ञ हेतु सीता को सोने की प्रतिमा बनाने पर तो उनका मर्यादा निर्वहन पराकाष्टा को छू लेता है। राम के राज्य में राम के प्रभाव से सभी नर पत्नीव्रत हो जाते है।

''एक नारि ब्रत रत सब झारी, ते मन बच क्रम पति हितकारी''।।[11]

तुलसीदास जी ने अपने समय में मानव–धर्म की राह में आघात वाली प्रवृतियों का बडी सूक्ष्मता से अध्ययन किया और लोकमंगलकारी समाधान भी जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया। ईशवर में पूरी आस्था और मनुष्य का पूरा सम्मान दोनो दृष्टियॉ तुलसी में एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं, तुलसी ने भक्ति को लोकधर्म सापेक्ष माना है, उन्हे उस भक्ति से चिढ़ थी जो पाखण्ड और अनाधिकार चर्चा पर केन्द्रित हो, उन्होंने सच्चे मन से राम की सरला भक्ति को महत्तव दिया है। आज भारत में तथाकथित स्वंयभू धर्मगुरूओं की बाढ़–सी आ गई है जिनके वाग्जाल में मनुष्य जीवन भ्रमित हो रहा है, ऐसी स्थिति में तुलसीदास प्रतिपादित भक्ति सबसे पहले मनुष्य को उसकी मनुष्यता का अहसास कराते हुए उसमें आत्मविश्वास भरकर 'राम' के समाने खड़ी करती है –

> ''तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता है–'मनुष्य की उच्चता पर अखण्ड विश्वास, इसलिए हासोन्मुख युग–जीवन के बीच उन्होंने दिव्य मानवमूर्ति की प्रतिष्ठा की, इसलिए वे मनुष्य, भगवान और ब्रह्म में एकता स्थापित कर सके''।।[12]

तुलसी का समस्त काव्य जनककल्याणकारी, भावना ''सर्वे भवंतु सुखिन'' की पराकाष्ठा है उन्होंने एक ऐसी स्वानुषासित, स्वतः प्रेरित समाज व्यवस्था का विकास किया, जिसमें एक और जहां सांस्कृतिक उन्नयन का पावन संदेश सन्निहित है वहीं दूसरी और समकालीन युगबोध, संवेदनशीलता, वैचारिकता परस्पर विरोधी मान्यताओं में समन्वयशीलता एवं मंगल भवन अमंगल हारी का उफान भी दृष्टिगोचर हो रहा है। वे रामराज्य की परिकल्पना करके धर्म, समाज, दर्शन, राजनीति, संस्कृति का सुदृढ़ीकरण करते हैं। तुलसी अपने युग के प्रति अत्यंत सचेत थे। उन्होंने वही लिखा जिसे उन्होंने अनुभूत किया और जो सोलह आने सत्य भी था । भक्ति–भावना, समन्वयतमकता, भ्रातृत्व विषय की व्यापकता, तत्कालीन समाज का चित्रण,युगबोध आदि विषयों पर साहित्य निर्माण किया । आज यांत्रिक युग की विभीषिका में मानस की प्रासंगिकता साकार हो उठी है क्योंकि वे अपनी लोकोन्मुख दृष्टि से उस युग को और आने वाले युग को समाज व्यवस्था का एक यूटोपिया दे सके । जिसमे सारा समाज–परिवार अपने चरित्र और दूसरे के व्यक्तित्व के अनुसार मर्यादित आचरण करेगा । डॉ. श्यामसुंदर दास के अनुसार ''यह उत्सर्ग भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिकता का घोतक है व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को परिवार से समाज और समाज से राज्य में लय करते हुए अंत में उसे विश्वात्मा में लय करने का पाठ सीखता है''[13]

सन्दर्भ

1. तुलसीदास–रामचरितमानस (उत्तरकांड)
2. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदीः हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ0 101
3. तुलसीदास–रामचरितमानस (उत्तरकांड)
4. तुलसीदास–रामचरितमानस (उत्तरकांड)
5. तुलसीदास–रामचरितमानस (अयोध्याकांड)
6. तुलसीदास–रामचरितमानस (अयोध्याकांड)
7. तुलसीदास–रामचरितमानस (उत्तरकांड)
8. तुलसीदास–रामचरितमानस (सुंदरकांड)
9. तुलसीदास–कवितावली (उत्तरकांड)
10. तुलसीदास, रामचरितमानस (उत्तरकांड)
11. तुलसीदास, रामचरितमानस (उत्तरकांड)
12. गोस्वामी तुलसीदास, डा0 राचन्द्र तिवारी, पृ0 69
13. डॉ. कुसुमराय : हिंदी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, पृ० 334